तीर्थभक्त शिरोमणि समाधि सम्राट आचार्य

# श्री महावीरकीर्ति विधान

**आशीर्वाद**

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव।
वैज्ञानिक आचार्य श्री कनक नंदीजी गुरुदेव।
प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनन्दी जी गुरुदेव।

**आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी गुरुदेव के**
**५० वे स्वर्णिम पुण्य तिथि महोत्सव २०२२**
**के उपलक्ष्य पर प्रकाशित**

# श्री महावीरकीर्ति विधान

**अथ श्री महावीरकीर्ति विधान पूजा प्रारभ्यते।**

## स्थापना

(तर्ज:- तुमसे लागी लगन .....)

महावीर कीर्ति गुरो!, हम पर करुणा करो।
भव से तारो, गुरुवर आन हृदय में पधारो।
मन ये गुरुवर सिंहासन तुम्हारा।
इस पर अधिकार केवल तुम्हारा।।
राजो आन यहीं, जाओ अब ना कहीं।
भाग्य सँवारो, गुरुवर आन हृदय में पधारो।।१।।
गुरुवर तुम बिन कौंन हमारा।
गुरुवर तुम बिन कौन सहारा।।
सेवक हम आपके, मारे हैं पाप के।
पाप निवारो, गुरुवर आन हृदय में पधारो।।२।।

**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति महामुनींद्र! महावीर शासनस्य कीर्ति कलश स्वरूप घोरोपसर्ग विजयिन् हे चारित्र चूड़ामणे ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।**

**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति महामुनींद्र! यंत्र तंत्र मंत्र विद्या पारंगत स्वपर कल्याण कारिन् हे तीर्थभक्त शिरोमणे ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।**

**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति महामुनींद्र! नानाविध दुर्द्धर तप सहित अंकलीकर आदिसागरस्य प्रथम पट्टाचार्य हे महासाधो ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।**



## अथ श्री महावीर कीर्ति स्तुतिः

( तर्ज:- बाहुबली स्वामी ....)

महावीर नन्दन!, पाप निकन्दन !
महावीरकीर्ति गुरो!, नमोस्तुते स्वामिन्!
तमे दशमासीत्, तव जन्माभवत् ।
फिरोजाबाद नगरे,
सुव्रत ज्ञान तिथौ , सुव्रत ज्ञान तिथौ ।
महावीर नन्दन.....।।१।।
वीर सिंधु चरणे, अष्टाविंशत्यायुषे।
टांकाटुंका नगरे,
क्षुल्लक व्रतमलभः , क्षुल्लक व्रतमलभः।
महावीर नन्दन.....।।२।।
आदिसिंधु चरणे, द्वात्रिंशत्यायुषे
ऊदगांव कुंजवने,
मुनिदीक्षामलभः ,मुनिदीक्षामलभः।।
महावीर नन्दन.....।।३।।
आदिसागरस्य , आचार्य पदविं।
श्री शेडवाल नगरे,
त्वमाप्नोः गुरुवर, त्वमाप्नोः गुरुवर ।।
महावीर नन्दन.....।।४।।
मृत्युमहोत्सवं , द्विषष्टिवर्षे।
मेहसाणा नगरे,
द्वासप्ततितमे , द्वासप्ततितमे।।
महावीर नन्दन.....।।५।।

## अथाष्टकम्

कंचन कलश में भक्ति से, सब तीर्थ का जल है भरा।
पद पुष्प को प्रक्षालता, मन पुष्प भावों से भरा।।

हे तीर्थभक्त शिरोमणे!, हे नाथ भव तारण तरण।
कलिकाल के महावीर श्री, महावीर कीर्ति गुरो नमन।।
**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति गुरुदेव चरण कमलेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।।**

भगवन् हरो पद छाँव दे, संसार के संताप को।
हे चन्द्र से भी शीत गुरु, चन्दन चढ़ाऊँ आपको।।
हे तीर्थभक्त शिरोमणे!,हे नाथ भव तारण तरण।
कलिकाल के महावीर श्री, महावीर कीर्ति गुरो नमन।।
**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति गुरुदेव चरण कमलेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।**

शिवसौख्य अक्षय सौख्य है, गुरुदेव की यह देशना।
यह आश ले अक्षत चढ़ा, पाऊं कभी भव क्लेश ना।
हे तीर्थभक्त शिरोमणे!, हे नाथ भव तारण तरण।
कलिकाल के महावीर श्री, महावीर कीर्ति गुरो नमन।।
**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति गुरुदेव चरण कमलेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।**

सूरजमुखी का फूल ले, जिनधर्म सूरज पूजता।
बन फूल गुरु के चरण का, निज ब्रह्म वैभव खोजता।।
हे तीर्थभक्त शिरोमणे!, हे नाथ भव तारण तरण।
कलिकाल के महावीर श्री, महावीर कीर्ति गुरो नमन।।
**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति गुरुदेव चरण कमलेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।**

तृष्णा क्षुधा के नाश को, तुमने धरा मुनिवेष को।
कर अर्चना नैवेद्य से, मैं भी धरूँ मुनिवेष को।
हे तीर्थभक्त शिरोमणे!, हे नाथ भव तारण तरण।
कलिकाल के महावीर श्री, महावीर कीर्ति गुरो नमन।।
**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति गुरुदेव चरण कमलेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

चंदा सितारे दीप हो, नभ शुद्ध स्वर्णिम पात्र हो।



कर आरती गुरु आपकी, हम सिद्ध पद के पात्र हो।।
हे तीर्थभक्त शिरोमणे!, हे नाथ भव तारण तरण।
कलिकाल के महावीर श्री, महावीर कीर्ति गुरो नमन।।
**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति गुरुदेव चरण कमलेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सब औषधों के ज्ञान से, गुरुवर सभी के दुख हरें।
यह भक्त धूप चढ़ा तुम्हें, भव रोग की औषध वरें।।
हे तीर्थभक्त शिरोमणे!, हे नाथ भव तारण तरण।
कलिकाल के महावीर श्री, महावीर कीर्ति गुरो नमन।।
**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति गुरुदेव चरण कमलेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।**

केलादि बहुविध फ ल लिए, गुरु आपका अर्चन करूँ।
सम्यक्त्व तरु बनकर तुम्हें, चारित्र फ ल अर्पण करूँ।
हे तीर्थभक्त शिरोमणे!, हे नाथ भव तारण तरण।
कलिकाल के महावीर श्री, महावीर कीर्ति गुरो नमन।।
**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति गुरुदेव चरण कमलेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।।**

जल गन्ध आदिक द्रव्य से, अर्चन सदा हो आपका।
मन से वचन से काय से, वंदन सदा हो आपका।।
हे तीर्थभक्त शिरोमणे !,हे नाथ भव तारण तरण।
कलिकाल के महावीर श्री , महावीर कीर्ति गुरो नमन।।
**ॐ ह्रूं परम पूज्य समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीर कीर्ति गुरुदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सुख शांति पुष्टि प्रदत्त गुरु, हम शान्तिधार करें चरण।
कर दिव्य पुष्पाञ्जलि चरण, ना हो जनम ना हो मरण।
वीरातिवीरं ऋषिवरं, धीरं गभीरं यतिवरं।
महावीर कीर्ति मुनिवरं, प्रणमामि भावी जिनवरं।।
**शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।**

# प्रथम वलय

## पुष्पांजलि

**अथ प्रथम वलये द्वादश कोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।**

## प्रत्येकार्घ्य

**(छन्द = नरेंद्र)**

(तर्ज :- नगरी नगरी द्वारे द्वारे....)

सम्यक दर्शन ज्ञान चरित की, दिव्य त्रिवेणी तुम लायें।
वीर हिमाचल तें निकसि ये, सरिता हम तुमसे पायें ।।
महावीर प्रभु के लघुनन्दन, महावीर कीर्ति गुरुवर।
सदा रहे गुरु हाथ तुम्हारा, हम सब बच्चों के सिर पर।।१।।

**ॐ ह्रूं रत्नत्रय मण्डित घोरोपसर्ग विजयी आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

आचार्यों के योग्य गुणों को, गुरुवर तुमने पाला हैं।
दुराचार से तभी तुम्हारा, कभी पड़ा ना पाला हैं।।
महावीर प्रभु के लघुनन्दन, महावीर कीर्ति गुरुवर।
सदा रहे गुरु हाथ तुम्हारा, हम सब बच्चों के सिर पर।।२।।

**ॐ ह्रूं आचार्य योग्य समस्त गुण मण्डित घोरोपसर्ग विजयी आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

चलते फिरते गुरुकुल जैसा, संघ आपका सुंदर था।
उपाध्याय के गुण से मण्डित, निर्मल हृदय समुंदर था ।।
महावीर प्रभु के लघुनन्दन, महावीर कीर्ति गुरुवर।
सदा रहे गुरु हाथ तुम्हारा, हम सब बच्चों के सिर पर।।३।।



**ॐ ह्रूं उपाध्याय योग्य समस्त गुण मण्डित घोरोपसर्ग विजयी आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

महा तपस्वी हे गुरुवर तुम, ध्यान मग्न जब रहते थे।
कलियुग में भी चौथे युग के, जिनकल्पी तुम लगते थे।।
महावीर प्रभु के लघुनन्दन, महावीर कीर्ति गुरुवर।
सदा रहे गुरु हाथ तुम्हारा, हम सब बच्चों के सिर पर।।४।।

**ॐ ह्रूं साधु योग्य समस्त गुण मण्डित घोरोपसर्ग विजयी आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

मूलगुणों के साथ आपने, उत्तर गुण भी पाले हैं।
दुर्गुण के सब कालिख मन से, तुमने सहज निकाले हैं।।
महावीर प्रभु के लघुनन्दन, महावीर कीर्ति गुरुवर।
सदा रहे गुरु हाथ तुम्हारा, हम सब बच्चों के सिर पर।।५।।

**ॐ ह्रूं मूलोत्तर गुण मण्डित घोरोपसर्ग विजयी आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

निकट भव्य गुरुदेव शीघ्र तुम, अर्हत पद को पाओगे।
मोक्ष गमन में साथ हमें भी, बोलो क्या ले जाओगे।।
महावीर प्रभु के लघुनन्दन, महावीर कीर्ति गुरुवर।
सदा रहे गुरु हाथ तुम्हारा, हम सब बच्चों के सिर पर।।६।।

**ॐ ह्रूं भावी अर्हत्सिद्ध स्वरूप घोरोपसर्ग विजयी आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

## पूर्णार्घ्य

**(छन्द = गीता)**

गुरुवर परमपद से सहित, जिनधर्म रथ पर चढ़ रहे।
त्रय रत्न के सूचक जहाँ, त्रय अश्व सुंदर लग रहे।।

वीरातिवीरं ऋषिवरं, धीरं गभीरं यतिवरं।
महावीर कीर्ति मुनिवरं, प्रणमामि भावी जिनवरं।।

**ॐ ह्रूं नाना गुण निधान समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सुख शांति पुष्टि प्रदत्त गुरु, हम शान्तिधार करें चरण।
कर दिव्य पुष्पाञ्जलि चरण, ना हो जनम ना हो मरण।
वीरातिवीरं ऋषिवरं, धीरं गभीरं यतिवरं।
महावीर कीर्ति मुनिवरं, प्रणमामि भावी जिनवरं।।

**शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।**



# द्वितीय वलय

## पुष्पांजलि

**अथ द्वितीय वलये द्वादश कोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।**

## प्रत्येकार्घ्य

**(छन्द = मत्तगयंद)**

(तर्ज:- वीर हिमाचल तें निकसि....)

चंचल यौवन चंचल जीवन, चंचल कंचन कामिनी सारे।
चंचल जोरू जमीन तथा जर, चंचल बन्धु व बांधव सारे।।
काम पड़े तब बात करे सब, काम नहीं तब बात बिगाड़े।
आँख खुले तक ही सब साथिन, आँख मुंदे तब कौन कहाँ रे।।१।।
**दोहा:**- इस अनित्य सद्भाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमे करो निष्पाप।।१।।

**ॐ ह्रूं अनित्य भावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

रक्षक कौन भला जग में जब भक्षक मध्य सभी हम बैठे।
धर्म क्रिया तज पाप क्रिया रत मृत्यु चिता पर हैं हम लेटे।।
मृत्यु स्वरूपक सर्प सदा मुख खोल समीप ही खावन आवे।
धर्म सिवाय भला तुझको तब ऐ जिय! कौंन बचावन आवे।।२।।
**दोहा:**- इस अशरण सद्भाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमें करो निष्पाप।।२।।

**ॐ ह्रूं अशरण भावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

नाट्य कलामय जीव तथा जग नाटक मंच सदा कहलावे।
नारक देव पशु नर बनकर जीव जहां नित नाट्य रचावे।।
रोग अशांति वियोग तथा बहु दुःख सहे सुख लेश न पावे।
अचरज है फिर भी उसको यह दुःखमयी जग ही नित भावे।।३।।

**दोहा:**- इस संसार सुभाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमें करो निष्पाप।।३।।

**ॐ ह्रूं संसार भावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

पुण्यज पापज कर्म शुभाशुभ भोग रहा यह जीव अकेला।
जन्म जरा मरणादिक में शठ एकल होकर ही नित खेला।
साथ नही किसका इसमे निज का कृत ही निज ने नित झेला।
क्यू करके करता फिर भी यह मूढ़ परस्पर क्लेश जमेला।।४।।

**दोहा:**- इस एकत्व सुभाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमें करो निष्पाप।।४।।

**ॐ ह्रूं एकत्व भावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

जीव तथा यह देह दिखे इक लेकिन एक नहीं यह भाई।
आयु झरे तब जीव विदा अरु देह जले कछु लक्कड़ माँई।।
छोड़ चला जिसको यह चेतन वो जड़ वस्तु समस्त पराई।
भेद विज्ञान बिना जिय ने बहु ठोकर आज अभी तक खाई।।७।।

**दोहा:**- इस अन्यत्व सुभाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमें करो निष्पाप।।७।।

**ॐ ह्रूं अन्यत्व भावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

देह अपावन है फि र भी यह जीव करे इससे अति माया।
नित्य सजा नहलाकर भी अति कुत्सित गन्धमयी यह काया।।



बाहर से यह सुंदर है पर भीतर से यह ग्लान कहाया।
ऐ जिय! क्यूँ तुमने फि र भी मलपिण्डन से अति प्रेम रचाया।।६।।

**दोहा:**- इस अशुचि सद्भाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमें करो निष्पाप।।६।।

**ॐ ह्रूं अशुचि भावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

आतम मंदिर में बसने वसु कर्म अहर्निश तत्पर बैठे।
आस्रव से अब सावध हो भवि ज्यों कछुआ निज अंग समेटे।।
चंचल योग हुआ नही कि यह आत्म प्रवेश करें घुसपैठे।
आस्रव ये कहलाय कहे गुरु आस्रव ही सबको दुख देते।।७।।

**दोहा:**- इस आस्रव सद्भाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमें करो निष्पाप।।७।।

**ॐ ह्रूं आस्रवभावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

आस्रव से बचने भवि आतम कर्मन आवन को अब रोके।
गुप्ति व्रतादिक धार महामुनि बंद करे त्रय योग झरोखे।।
श्री गुरुदेव कहे यह संवर भूषण रूप महामुनियों के।
सज्जित हो जिससे मुनिराजन कष्ट हरे बहुधा करमों के।।८।।

**दोहा:**- इस संवर सद्भाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमें करो निष्पाप।।८।।

**ॐ ह्रूं संवर भावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

ढाल बना शुचि चारित को अब कर्मन राक्षस से बच जाओ।
गुप्ति व्रतादिक शस्त्र लिए उस राक्षस को अब मार भगाओ।।
कर्म क्षयार्थ यही तप की विधि हे भवि जीव इसे अपनाओ।
सम्यक रीत यही अपनाकर सिद्ध शिला पर सत्वर जाओ।।९।।

**दोहा:**- इस निर्जरा सुभाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमें करो निष्पाप।।९।।

**ॐ ह्रूं निर्जरा भावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

चौदह राजु प्रमाणिक अद्भुत लोक विषै बसती त्रस नाड़ी।
भीतर में जिसके त्रस स्थावर बाहर स्थावर जीव अनाड़ी।।
जन्म व मृत्यु अनन्त यहां कर भोग चुके हम कष्ट अपारी।
सम्यक संयम रत्न बिना यह जीव भ्रमें जग में अति भारी।।१०।।

**दोहा:**- ऐसे लोक सुभाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमें करो निष्पाप।।१०।।

**ॐ ह्रूं लोक भावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

इंद्र नरेंद्र खगेन्द्र सभी पद जीव अहो कई बार वरे है।
किंचित पुण्य विपाक हुआ तब इन्द्रिय भोग मिले सबरे है।।
लेकिन दुर्लभ है जग में वह सम्यकज्ञान मुनीन्द्र कहे है।
सम्यकज्ञान सुधा भवि पीकर सर्व चतुर्गति दुःख दहे है।।११।।

**दोहा:**- बोधि दुर्लभ भाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमें करो निष्पाप।।११।।

**ॐ ह्रूं बोधि दुर्लभ भावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

निर्मल धर्म कहे प्रभु सम्यक दर्शन ज्ञान चरित्र स्वरूपी।
धर्म मयी रथ पे चढ़ के मुनि शीघ्र बने परमात्म अरूपी।।
मोह व राग व द्वेष परे यह धर्म सुधा रस मिष्ट अनूपी।
क्यूँ झुलसे भव तापन में जब छाँव मिली इस कल्पतरू की।।१२।।



**दोहा:**- ऐसे धर्म सुभाव से, धन्य धन्य गुरु आप।
महावीर कीर्ति गुरो!, हमें करो निष्पाप।।१२।।

**ॐ ह्रूं धर्म भावना सहित तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

## पूर्णार्घ्य

द्वादश अनुप्रेक्षा सहित, गुरुदेव की शुचि आतमा।
गुरुदेव सम सद्भावना , हम भी वरें यह प्रार्थना।।
वीरातिवीरं ऋषिवरं, धीरं गभीरं यतिवरं।
महावीर कीर्ति मुनिवरं, प्रणमामि भावी जिनवरं।।

**ॐ ह्रूं द्वादश भावना सहित समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सुख शांति पुष्टि प्रदत्त गुरु, हम शान्तिधार करें चरण।
कर दिव्य पुष्पाञ्जलि चरण, ना हो जनम ना हो मरण।
वीरातिवीरं ऋषिवरं, धीरं गभीरं यतिवरं।
महावीर कीर्ति मुनिवरं, प्रणमामि भावी जिनवरं।।

**शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।**

# तृतीय वलय

## पुष्पांजलि

**अथ तृतीय वलये अष्टादश कोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।**

## प्रत्येकार्घ्य

**(छन्द = शुद्ध गीता)**

(तर्ज:- १ किसी के काम जो आये
२ मारने वाला है भगवान ....)

महामुनि आदिसागर ने, उगाया जो बगीचा है।
जिसे तुमने धरम जल से, अहो गुरुदेव सींचा हैं।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।१।।

**ॐ ह्रूं मुनि कुंजर आचार्य श्री आदिसागरस्य प्रथम पटस्थ समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

मुरैना आदि में पढ़कर, हुए ज्योतिष व आयुर्विद्।
तथा तुम न्यायतीर्थ बनें, तर्क व्याकरण व शास्त्रीविद् ।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।२।।

**ॐ ह्रूं सर्व विद्या विशारद समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

दरश मुनि का कठिन था जब, धरा मुनिवेष तब तुमने।
श्रमण वन ऊदगाव नगर, हुआ पावन परम सच में।।



महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।३।।

**ॐ ह्रूं प्रतिकूल समये मुनि व्रत आराधक समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

बड़े से भी बड़े साधु, तुम्हारे पास पढ़ते थे।
तुम्हारी ज्ञान महिमा की, प्रशंसा कर न थकते थे।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।४।।

**ॐ ह्रूं सुज्ञान तीर्थ स्वरूप समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

महा सिद्धांतविद् तुमसे, सभी विद्वान डरते थे।
श्रवण कर आपकी वाणी, कुमत रत वे सुधरते थे।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।५।।

**ॐ ह्रूं परम सिद्धांत वेत्ता वादि मुनि स्वरूप निर्भीक समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

किया निद्रा विजय तप जो, उसे किन शब्द से बोले।
अहो गुरु आप ही बोलो, तुम्हे किस शब्द से तौलें।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।६।।

**ॐ ह्रूं निद्रा विजय तप आराधक समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

विविध आसन व शीर्षासन, लगाते आप घण्टों तक।
श्रवण कर उसे होते, हमारे प्राण कण्ठों तक।।

**ॐ ह्रूं यत्र मन्त्र तंत्र शक्ति सम्पन्न समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

लगी जिस भक्त पर पीछी, करे क्या बात हम उसकी।
सरस वात्सल्य वर्षा से, न भीगी आतमा किसकी।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।१२।।

**ॐ ह्रूं अत्यंत वात्सल्य दृष्टि सहित दीन दुःखी वत्सल समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

वचन की सिद्धी में गुरु के, अटल वरदान पलते थे।
सुमुख निर्गत वचन बल से, सभी के काम फ लते थे।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।१३।।

**ॐ ह्रूं वचन सिद्धि सहित समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

तुम्हारी औषधी विद्या, सरस गंगा समानी थी।
संहिता भद्रबाहु की, जहाँ जमुना प्रमाणी थी।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।१४।।

**ॐ ह्रूं आयर्वेद आदि औषध विद्या पारंगत समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

किये उपसर्ग दुष्टों ने, अनेकों बार ही तुम पर।
हुए विचलित कदापि न तुम, क्षमा की भावना रखकर।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।१५।।



महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।७।।

**ॐ ह्रूं विविध दुर्द्धर आसन विजयी समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

दिवस या रात्रि जो भी हो, गुरो! जब ध्यान करते थे।
धरण पद्मावती आदिक, तुम्हे प्रत्यक्ष भजते थे।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।८।।

**ॐ ह्रूं यक्ष यक्षी आदि देवपूजित समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

अहो! इन ध्यान योगी की, करें क्या ध्यान चर्चा हम।
न हम किस खेत की मूली, करें बस चरण अर्चा हम।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।९।।

**ॐ ह्रूं अतिशय ध्यान योगी समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सुमर तप ये तुम्हारा ज्यों, हमें संशय सदा होता।
अभी कलिकाल है अथवा, अभी जिन काल है चौथा।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।१०।।

**ॐ ह्रूं चतुर्थ काल समान परम तपस्वि समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

तुम्हारी मन्त्र शक्ति महा, प्रबल संजीवनी जैसी।
शरण गत भक्त की मिटती, विपत्ति हो भला कैसी।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।११।।

**ॐ ह्रूं प्रतिकूल समय मुनि व्रत आराधक समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

तीर्थ क्षेत्रादि पर गुरु की, अपूरब भक्ति प्रेरक थी।
तुम्हारी ये प्रवर श्रद्धा, अहो सम्यक्त्व वर्धक थी।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।१६।।

**ॐ ह्रूं तीर्थ भक्त शिरोमणि समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

समाधि मरण रचा तुमने, करी जग से विदाई हैं।
मरण की कण्डिका जग को, स्वयं करके सिखाई है।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।१७।।

**ॐ ह्रूं आगमोक्त निर्दोष सल्लेखना साधक समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

तुम्हारा जीवनी के सुर, सदा माँ शारदा गाये।
तुम्हारे सम महा गुरु को, पुनः अब हम कहाँ पायें।।
महावीरं महावीरं, महावीरकीर्ति गुरु धीरं।
हरो पीरं हरो पीरं, हमें दो नाथ भव तीरं।।१८।।

**ॐ ह्रूं युगाचार्य स्वरूप समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

## पूर्णार्घ्य

**(छन्द = गीता)**

गुणवान हो गुणखान हो, गुरुवर गुणों के धाम हो।
तुम सम गुणों की सम्पदा, गुरुवर हमें भी दान दो।।



वीरातिवीरं ऋषिवरं, धीरं गभीरं यतिवरं।
महावीर कीर्ति मुनिवरं, प्रणमामि भावी जिनवरं।।

**ॐ ह्रूं नाना गुण निधान समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

## महार्घ्य

**(छन्द = )**

गुरु बीसवीं सदि में प्रथम, जो संघ रचना कर गये।
आगम प्रमाणिक संघ का, परिचय सभी को दे गये।।
पद पट्ट सन्मति सिंधु को, नेमी प्रवर्तक पद वरें।
गुरु कुन्थु गणधर पद वरें, सम्भव स्थविर पद को धरें।।१।।
विजयामति माँ आपसे, गुरुवर प्रथम गणिनी बनी।
हे संघ शिल्पी आपका, ये संघ अब भी हैं धनी।
वीरातिवीरं ऋषिवरं, धीरं गभीरं यतिवरं।
महावीर कीर्ति मुनिवरं, प्रणमामि भावी जिनवरं।।२।।

**ॐ ह्रूं परम आदर्श स्वरूप आगम पथ दर्शक समाधि सम्राट आचार्य श्री महावीरकीर्ति महामुनीन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सुख शांति पुष्टि प्रदत्त गुरु, हम शान्तिधार करें चरण।
कर दिव्य पुष्पाञ्जलि चरण, ना हो जनम ना हो मरण।
वीरातिवीरं ऋषिवरं, धीरं गभीरं यतिवरं।
महावीर कीर्ति मुनिवरं, प्रणमामि भावी जिनवरं।।

**शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।**

---

**ॐ ह्रूं श्री महावीरकीर्ति गुरवे नमः।**
**( पुष्प आदि द्वारा ९ ,२७ या १०८ बार जाप करे)**

# जयमाला

**दोहा:**- गुणसागर गुण के धनी, गुणरवि हे गुणवान।
गुण गाऊँ कैसे गुरो!, हे अगणित गुणखान।।

**(छन्द = शंभु)**

हे आदिसिन्धु गणनायक के, नंदन तुमको वंदन मेरा।
जिनधर्म प्रवर्तक हे गुरवर, हर लेना भव भव का फेरा।।
है धन्य फिरोजाबाद नगर, जिसमें ऋषिवर का जन्म हुआ।
पितु रतनचंद के आंगन में, जन्मोत्सव सुंदर भव्य हुआ।।१।।
सारे जग की जननी माता, बूँदादेवी कहलायी है।
मुनिनायक की माता बनकर, मुनियों की माँ कहलायी है।
तीरथ करने के भाव जगे, गर्भस्थ आपके अतिशय से।
सम्मेदाचल के दर्श करें, माता तुमको उर में धर के।।२।।
तीर्थंकर मुनिसुव्रत जिन की, शुभ ज्ञान कल्याणक तिथि आई।
तब जन्म लिया तुमने भगवन्, मानो मुनिसुव्रत छवि आई।।
दृढ़ संकल्पी स्वाभिमानी, शुभ नाम महेन्द्र निराला था।
अणुव्रत वा अष्ट मूलगुण को, बचपन से तुमने पाला था।।३।।
बचपन में ही ज्ञानार्जन कर, विद्यालय की तुम शान बने।
ज्योतिष औषध वा तर्क छंद, व्याकरण जिनागम शास्त्र पढे।।
श्री चंद्र सिंधु ऋषि से तुमने, शुभ ब्रह्मचर्य व्रत पाया था।
मुनिनंदन क्षुल्लक दीक्षा व्रत, श्री वीर सिंधु से पाया था।।४।।
मुनि कुंजर आदि धुरंधर हैं, इस युग के श्रेष्ठ मुनीश्वर हैं।
ऐसे गुरुवर श्री आदिसिन्धु, मुनिपद दाता सूरीश्वर हैं।।
आचार्य आदिसागर जैसा, ऋषिवर तुमने तप अपनाया।
तप चूड़ामणि की सेवा कर, उनका ही सूरी पद पाया।।७।।
अठदश भाषाओं के ज्ञाता, पशु-पक्षी की भाषा जाने।
प्रामाणिक प्रवचन शैली से, जग तुमको जिनवाणी माने।।
नाना उपसर्ग सहे गुरुवर, घनघोर महातप अपनायें।
मेरूवत् अचल रहे हरदम, प्रलंयकर भी क्यों ना आये।।६।।



तुम वाक्यसिद्ध तुम मंत्रसिद्ध, तपसिद्ध यंत्रविद् कहलाये।
सर्वज्ञ कथित विद्यानुवाद, मानो तुम लेकर ही आये।।
पद्माम्बा जिनशासन देवी, तुम भक्ति करने नित आती।
बहु अतिशय तेरे कालजयी, जिनका यश यह दुनियाँ गाती।।७।।
आगम प्रमाण जिनका जीवन, शिष्यों को ज्ञानामृत बाँटें।
करुणा के सागर करुणा कर, खोले दुःखियों की दुःख गाँठें।।
गुरुदेव आपकी पींछी से, विषदंश सर्प का नश जाता।
इस कारण श्रमण चिकित्सालय, शुभ संघ तिहारा कहलाता।।८।।
जिनधर्म प्रभावक विमल सिंधु, तुम प्रथम शिष्य मुनिरत्न बनें।
सन्मतिसागर तव पट्टसूरी, तुम सम तप गुण प्रतिरूप बने।।
गुरु कुन्थु सिंधु को गणधर पद, हे गुरुवर तुमने दान दिया।
श्री नेमि प्रवर्तक तथा स्थविर, सम्भव सागर को मान दिया।।९।।
फिर गणिनी बना विजया माँ को, गुरु सल्लेखन स्वीकार करें।
बासठ वर्षो की आयु तक , व्रत साधन मय आचार धरें।।
जब आये मेहसाणा नगरी ,तुमको रोगों ने घेर लाया।
पद और संघ का भार त्याग ,तुमने जग से मुख फे र लिया।।१०।।
निस्पृह हो नश्वर काया से , निज आत्म ब्रह्म में रमण किया।
धर भेद ज्ञान गुरुवर तुमने निर्दोषी पण्डित मरण किया।।
सन् दस में जन्म हुआ गुरु का, मुनि दीक्षा सन् त्र्यालीस वरी।
गुरु का ही सूरी पद त्र्यालीस, सन् बहतर अंतिम सांस भरी।।११।।
गुरुवर आओ मनमंदिर में, इस हृदय-कमल पर बस जाओ।
अपने इस छोटे बालक को, चरणों का कमल बना जाओ।।
गुरु महावीर गम्भीर धीर, अति सुदृढ आतम बलधारी।
इन चरण कमल से चन्द्रगुप्त, हो जाओ शाश्वत सुखकारी।।१२।।

**ॐ ह्रूं आचार्य श्री महावीरकीर्ति गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

**दोहा**

**महावीरकीर्तिगुरो!, शील क्षमा गुणवान।**
**जिनशासन के आप हो , कीर्ति कलश अभिराम।।**
**तीन गुप्ति शिवराज दो, यही हमारी आस।**
**मोक्ष गमन तक चरण में, रखो बनाकर दास।।**

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

## विधान प्रशस्ति

आदि सिंधु के वंश में, महावीर गुरुराज।
उनका श्रेष्ठ विधान ये ,करते हम सब आज।।१।।
कुन्थु सिंधु गुरुदेव का मिला शुभाशीर्वाद।
उनके चरणन बैठ कर ,किया यही शुभ काज।।२।।
कनकनन्दि गुरुवर तथा गुप्तिनन्दि गुरुराज।
मिला शुभाशीष आपका,करने को यह काज।।३।।
इसकी पहली प्रेरणा, कुन्थु सिंधु मुनिनाथ।
अपर प्रेरणा हैं गणी ,गुरू सुनील महान।।४।।
सुयशगुप्त मुनिराज का सम्पादन सुखधाम।
कुंथुगिरि में आन यह, रचा अमूल्म विधान।।५।।
सन् इक्कीस के अंत दिन, लेखन की शुरुआत।
सन् बाइस के पांचवे ,दिन में हुआ समाप्त।।६।।
अलका बहन शिवानि को , संयोजन का श्रेय।
महावीरकीर्ति गुरो, हमको दो शिवश्रेय।।७।।